"राजा राममोहन राय के शिक्षा–दर्शन की प्रासंगिकता की उपयोगिता का मूल्यांकन"

लोहंस कुमार कल्याणी
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षक– शिक्षा विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा (उ० प्र०)

सारांश

प्राचीन काल से ही भारत एक महान राष्ट्र रहा है। भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, ज्ञान–विज्ञान तथा रीति–रिवाज विश्व में सर्वश्रेष्ठ रही है। अपने गौरवमय अतीत के लिए आज भी भारत जगत विख्यात है। प्राचीन कालीन भारत की बहुमुखी उन्नति और विकास का श्रेय तत्कालीन भारतीय गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को था। आश्रमों के पावन सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में, गुरूकुलों में 25 वर्ष के ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए ज्ञानार्जन करने वाले ब्रह्मचारी भविष्य में समाज के सफल नागरिक होते थे, जिनके सद्कार्यों से राष्ट्र एवं समाज का उन्नयन होता था। भारत के ज्ञान–विज्ञान से प्रभावित होकर विदेशों के बहुत से विद्यार्थी एवं विद्वान ज्ञानार्जन हेतु यहाँ आया करते थे।

प्रस्तावना

शताब्दियों तक पल्लवित–पुष्पित होने वाली यह शिक्षारूपी बेलि, मध्य युग की अराजकता एवं बर्बरता सहन न कर सकी और कुम्हला गई, किन्तु इस बेलि के कुछ बोज यत्र–तत्र फैल गये, जो काशी, मुथरा, मिथिला, अयोध्या, हरिद्वार, चित्रकूट जैसी धार्मिक नगरियों में संस्कृत पाठशालाओं एवं गुरूकुलों के रूप में अंकुरित हुए, जिनमें प्राचीन शास्त्रों का अध्ययनदृअध्यापन होता था। यह शिक्षण संस्थाएँ प्राचीन

ज्ञान–विज्ञान एवं परम्पराओं को अपने में सँजोए पुनः स्वर्णिम युग की प्रतीक्षा कर रही थीं कि उसी समय में ब्रिटिश शासन का सूत्रपात हो गया। इस शासन ने भारत की परम्पराओं, सभ्यता, संस्कृति एवं कला–साहित्य पर तुषारापात कर, पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति के प्रचार और प्रस्थापन का प्रयास किया तथा उन्हें सफलता भी मिली।

पाश्चात्य सम्पर्क ने भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्र में एक अपूर्व हलचल उत्पन्न कर दी थी। भारत के अंग्रेजों ने दुहरी चाल चली, एक ओर तो वे भारतवासियों को असभ्य, दास और अन्धविश्वासी कहते रहे तो दूसरी ओर वे उन गतिविधियों और संस्थाओं का विरोध करते रहे, जो प्रगतिशील थीं तथा भारतीयों में राजनीतिक एवं सामाजिक जागरण के लिए प्रयासरत थीं। भारतीय समाज उस समय राजनीतिक एवं सामाजिक जागरण के लिए प्रयासरत था। भारतीय समाज उस समय छुआछूत, जातिवाद, ऊँच–नीच, बाल–विवाह, सतीदृप्रथा जैसी संकुचित भावनाओं से ग्रसित था। पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति ने हमारी समस्त प्राचीन परम्पराओं, धारणाओं, विश्वासों और विचारों को चुनौती दी। फलस्वरूप हम उन पर नये सिरे से विचार करने के लिए विवश हुए और पाश्चात्य चुनौती का उत्तर देना अनिवार्य हो गया,परन्तु भारतीयों का एक वर्ग पाश्चात्य संस्कृति से इतना प्रभावित हो गया कि वह पाश्चात्य विचारों एवं रीतियों की नकल विवेक शून्य होकर करने लगा। इस वर्ग के नवयुवक पश्चिम का सब कुछ अच्छा समझते थे और भारतीय संस्कृति का सब कुछ बुरा । वे भारत भूमि पर नवीन योरोप बसाने का प्रयास करते थे, परन्तु इस प्रक्रिया पर भारतीय नवाभ्युत्थान और पुनर्जागरण ने कुछ सीमा तक अंकुश लगा दिया।

राजा राममोहन राय उन व्यक्तियों में से एक हैं, जिन्होंने इस देश में रूढ़िवादी शिक्षा के स्थान पर प्रगतिशील शिक्षा के विकास का बिगुल बजाया और उसके विकास में एक बड़ा योगदान दिया। यहाँ इनके शैक्षिक चिन्तन और शिक्षा जगत को इनकी देन का मूल्यांकन प्रस्तुत किया जा रहा है :–

1□शिक्षा का सम्प्रत्यय

राजा राममोहन राय केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे, इनकी दृष्टि से वास्तविक शिक्षा वह है, जो मनुष्यों के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के सन्तुलित विकास में सहायक हो। भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास से इनका तात्पर्य संकीर्ण न होकर बड़ा विस्तृत था। वे भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के ऐसे सन्तुलित विकास के समर्थक थे, जिससे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और समूची मानव जाति का हित हो। यह पूर्णतः स्पष्ट है कि राजा राममोहन राय शिक्षा को मानव कल्याण का साधन मानते थे। सचमुच वास्तविक शिक्षा तो वही कही जाएगी, जो समूची मानव–जाति का कल्याण करे।

2- शिक्षा के उद्देश्य

राजा राममोहन राय द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्यों को पाँच शीर्षकों में संजोया जा सकता है, जो निम्नांकित है:–(1) ज्ञानार्जन, (2) मानसिक विकास, (3) नैतिकता एवं चारित्रिक विकास, (4) व्यावसायिक विकास और (5) आध्यात्मिक विकास । परन्तु इन सब उद्देश्यों को इन्होंने कुछ अपने तरीके से लिया है और बड़े व्यापक रूप में लिया है। मानसिक विकास से इनका तात्पर्य विवेक के विकास से था, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास से इनका तात्पर्य सामाजिक कुरीतियों एवं सांस्कृतिक संकीर्णता को दूर

कर एक नए समाज क निर्माण की ओर अग्रसर करने से था, नैतिक एवं चारित्रिक विकास के नाम पर वे मानवीय नैतिकता पर बल देते थे, व्यावसायिक विकास के नाम पर कुटीर उद्योग धन्धों, सामान्य व्यवसायों और भारी उद्योगों की शिक्षा पर बल देते थे और आध्यात्मिक विकास के नाम पर धर्म संकीर्णता एवं अन्धविश्वासों को दूर कर ऐकेश्वरवाद की शिक्षा देने पर बल देते थे।

साफ जाहिर है कि इनके द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्य अति व्यापक हैं। इनमें वे सब उद्देश्य भी समाहित हैं, जिनकी आज हमारे देश में विशेष रूप से चर्चा की जाती है, जैसे– समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, अर्राष्ट्रीय सद्भाव जनसंख्या नियन्त्रण एवं पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम । मानव कल्याण में ये सब समाहित हैं।

3- शिक्षा की पाठ्यचर्चा

राजा राममोहन राय भारतीय प्राचीन आदर्श श्रेष्ठ ज्ञान जहाँ से और जिस व्यक्ति से प्राप्त हो, प्राप्त करना चाहिए, के समर्थक थे। इन्होंने विद्यालयी और महाविद्यालयी पाठ्यचर्चा में भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी भाषा को स्थान दिया और भारतीय उद्योग धन्धों की शिक्षा के साथ–साथ यूरोपीय भारी उद्योगों की शिक्षा को स्थान दिया। ये पाठ्यचर्चा में धर्म के नाम पर धर्मनिरपेक्षता की शिक्षा के समर्थक थे और मानव धर्म की शिक्षा के समर्थक थे ।

यह पूर्णतः स्पष्ट है कि पाठ्यचर्चा के निर्माण के सम्बन्ध में इनका दृष्टिकोण बड़ा व्यापक था । यह उसी व्यापक पाठ्यचर्चा का परिणाम है कि आज हमारा देश विकासशील देशों की कोटि में आ गया है और जब वह दिन दूर नहीं, जब हमारा देश विकसित देशों की कोटि में अपना सर्वोच्च स्थान प्राप्त करेगा।

4- शिक्षण–विधियाँ

राजा राममोहन राय प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों प्रकार की शिक्षण विधियाँ के समर्थक थे। इन्होंने स्पष्ट किया कि सामान्य विषयों के शिक्षण के लिए कथन, व्याख्या एवं वाद–विवाद विधियाँ अधिक उपयुक्त होती है, भाषा, कला, संगीत एवं विज्ञान विषयों के शिक्षण के लिए प्रयोग एवं अभ्यास विधियाँ अधिक उपयुक्त होती हैं और आध्यात्मिक ज्ञान के लिए उपदेश, प्रार्थना एवं गायन विधियाँ अधिक उपयुक्त होती हैं।

हम सब जानते हैं, इस समय शिक्षण विधियों का चयन बच्चों की आयु, उनके मानसिक स्तर और पढ़ाए जाने वाले विषय और सिखाए जाने वाली क्रियाओं की प्रकृति के आधार पर किया जाता है। इस दृष्टि से राजा राममोहन राय के शिक्षण–विधि सम्बन्धी विचार तत्समय की आवश्यकताओं के अनुरूप ही खे जाएंगे ।

5- अनुशासन

राजा राममोहन राय ऊपर से थोपे कठोर अनुशासन के थे। वह विद्यालयों में बच्चों को पूर्ण स्वतन्त्रता देने के पक्ष में भी नहीं थे। इनका विश्वास था कि यदि शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच मधुर सम्बन्ध हों तो अनुशासन स्थापित हो जाता है।

एक सीमा तक यह बात सही है कि मधुर सम्बन्ध और विश्वास की स्थिति में अनुशासन सहज में ही स्थापित हो जाता है, परन्तु इसके साथ यह भी तथ्य सामने रखना चाहिए कि बच्चे अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति कठिनता से छोड़ पाते हैं, उसके लिए कुछ बाहरी प्रयत्न भी आवश्यक होते हैं।

6- शिक्षक

राजा राममोहन राय की दृष्टि से शिक्षकों को ज्ञानवान के साथ–साथ स्थान, जाति एवं धर्म आदि किसी प्रकार की संकीर्णता से ऊपर होना चाहिए, उसी स्थिति में वे बच्चों को नए समाज के निर्माण के लिए सक्षम बना सकते हैं। शिक्षक को अनेक भाषाओं का विद्वान एवं ज्ञाता होना चाहिए, ऐसी राजा राममोहन राय की अवधारणा थी। इसके पीछे उनका उद्देश्य प्रत्येक धर्म एवं सम्प्रदाय के विद्यार्थियों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना था। काश आज शिक्षक ही नहीं, अपितु सभी मनुष्य स्थान, एवं धर्म की संकीर्णता से ऊपर उठ जाएँ तो संसार के सारे विवाद स्वंय समाप्त हो जाएँ और संसार सुख एवं शान्ति स्थापित हो जाए।

7- विद्यालय

राजा राममोहन राय विद्यालयों को नवीन समाज के निर्माण की प्रयोगशाला मानते थे। इनकी दृष्टि से यह तभी सम्भव है, जब विद्यालय स्वयं किसी प्रकार की संकीर्णता से मुक्त हों। वास्तविक बात तो यह है कि विद्यालयों को व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और पूरे संसार को उचित दिशा प्रदान करने वाली संस्थाओं के रूप में कार्य करना चाहिए, परन्तु विवशता तो यह है कि अब इनका स्वरूप देश–विदेश के शासनतन्त्र पर निर्भर करता है।

8- शिक्षा के अन्य महत्वपूर्ण पक्ष

राजा राममोहन राय जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा, सभी के प्रबल समर्थक थे, परन्तु इनके विषय में इनका अपना बड़ा विस्तृत दृ ष्टिकोण था। इन्होंने जन शिक्षा हेतु निःशुल्क शिक्षा पर बल दिया, स्त्री–शिक्षा के

सन्दर्भ में स्त्रियों को जागरूक करने पर बल दिया, व्यावसायिक शिक्षा के नाम पर देशी कुटीर उद्योगों के साथ यूरोपीय विज्ञान एवं तकनीकी की शिक्षा द्वारा भारी उद्योगों की शिक्षा पर बल दिया और धार्मिक शिक्षा के नाम पर धर्मनिरपेक्षता पर बल दिया।

राजा राममोहन राय भारत में जन–शिक्षा, स्त्री–शिक्षा, य्रोपीय व्यावसायिक शिक्षा और धर्मनिरपेक्षता की शिक्षा का बिगुल बजाने वाले पहले व्यक्ति थे। आगे चलकर रविन्द्र नाथ टैगोर और स्वामी विवेकानन्द ने उनके इस नारे को और अधिक बुलन्द किया।

9- राजा राममोहन राय का प्रभाव

राजा राममोहन राय ने मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के विकास पर समान बल दिया है। इन्होंने मनुष्य के भौतिक विकास के लिए देश–विदेश के ज्ञान एवं कौशल को सीखने और आध्यात्मिक विकास के लिए सभी धर्मों के मूल तत्व एकेश्वरवाद की शिक्षा पर बल दिया है। जन–शिक्षा, स्त्री–शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और धर्मनिरपेक्षता की शिक्षा का जो बिगुल राजा राममोहन राय ने बजाया था, यह उसी का परिणाम है कि हमारा देश निरन्तर विकास कर रहा है। काश आज की वोट की रणनीति करने वाले राजनेता, राजा राममोहन राय के धर्मनिरपेक्षता सम्बन्धी विचार को ग्रहण कर लें और उसे शिक्षा के क्षेत्र में लागू कर दें तो फिर वह दिन दूर नहीं, जब हमारा देश साम्प्रदायिकता से मुक्त होगा और यहाँ के नागरिक सुख एवं शान्ति से जीवन जी सकेंगे।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि राजा राम मोहन राय ने जिस पूर्वदृपश्चिम के ज्ञान–विज्ञान से युक्त शिक्षा का श्री गणेश भारत में किया, यह उसी का फल है कि आज हमारा देश इतनी प्रगति कर सका है। इस विचार को आगे बल दिया गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानन्द ने। यह देश इन त्रिमूर्तियों का सदैव ऋणी रहेगा।

सन्दर्भ सूची एवं सहायक ग्रन्थानुक्रमणी

1. सौम्येन्द्र नाथ ठाकुर, राजा राममोहन राय, नई दिल्ली, साहित्य अकादेमी 1972

2 . राजा राममोहन राय, पटना, ब्राह्म समाज 1972

3 .Carpenter, Lant: A Review of the Labours, Opinions, and Character of Raja Rammohan Roy in a discourse on Occasion of Death delivered in Lewin's Mead Chapel, Bristol. London and Bristol 1833.

4.Carpenter, Mary : Last days in England of the Rajah Rammohan Roy. London, 1866.

5. Chanda, Ramaprasad & Majumdar, Jatindra Kumar (ed.): Letters and Documents Relating to the Life of Raja Rammohan Roy Vol.I (1791-1830) with an Introductory memoir. Calcutta, Orient Book Agency, 1938.

6. Chatterjee, Ramanand : Rammohan Roy and Modern India. Calcutta. 1918.

7.Collet, Sophia Dobson : The life and letters of Raja Rammohan Roy. 3rd Ed. by Dilip Kumar Biswas & Prabhat Chandra Ganguli. Calcutta, Sadharan Brahmo Samaj, 1962. (First Edition 1900)

8. Crawford, S. Cromwell. Rammohan Roy: His ern and Ethics. New Delhi, Arnold Heinemann, 1984,

9.Dasgupta, B.N. : The life and Times of Rajah Rammohan Roy. New Delhi, Ambika Publications, 1980.

10.Dasgupta, B.N. Rajah Rammohan Roy: The Last Phase. New Delhi, Uppal Publishing House, (1982)

11.The Father of Modern India. Commemoration Volume of the Rammohan Roy Centenary Celebrations. 1933. Calcutta, 1935.

12.Home, Amal : ed. Rammohan Roy: The Man and his work Calcutta, 1933.

13.Iqbal Singh, Rammohan Roy : A Biographical enquiry into the making of Modern India. 2nd rev. ed. Bombay, Asia Publishingh House, 1983. (First ed. 1958)

14.Joshi. V.C. ed. : Rammohan Roy and the Process of Modernization in India. Delhi, Vikas, 1975.

15.Kopf, David : British Orientalism and the Bengal Renaisance. Calcutta, Firma K.L. Mukhopadhayay, 1969.

16. Majumdar, Jatindra Kumar (ed.) : Raja Rammohan Roy and the Last Moghuls: a selection from official records 1803-1859, with an historical introduction. Calcutta, Art Press, 1939.

17.Majumdar, Jatindra Kumar (ed.): Raja Rammohan Roy and progressive Movements in India : a selection from Records 1775-1845 with an historical Introduction. Calcutta, Art Press, 1941.

18. Majumdar, R.C. : Glimpses of Bengal in the Nineteenth century. Calcutta, Firma K.L. Mukhopadhyay, 1960.

19 .Ray, Ajit Kumar : The Religious Ideas of Rammohan Roy, New Delhi, Kanak Publication. 1976.

20. Ray, Niharranjan, Ed.: Rammohan Roy a Bi-Centenary Tribute, New Delhi, National Book Trust, 1974.

21.Sarkar, S.C. Ed.: Rammohan Roy on Indian Economy. Calcutta, Rare Book Publishing Syndicate, 1965.

22. Sen, Amiya Kumar : Raja Rammohan Roy : The Representative man. Calcutta, Calcutta Text Book Society, 1967.

23. Sinha, N.K.: Economic History of India.

24.Tarachand, : History of Freedom Movement in India, Vol. 1.

25.Robertson, B.C. : Raja Rammohan Roy : The Father of Modern India. Delhi, Oxford University Press. 1995.